अमर उजाला | अमरोहा | amarujala.com | मुरादाबाद | रविवार, 6 नवंबर

महर्षि दयानंद ने वर्ग विशेष नहीं बल्कि समाज उत्थान के लिए किया काम

धर्म के बिना विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना धर्म लंगड़ा है, परिस्थितियां प्रतिभाओं को जन्म देती हैं

संवाद न्यूज एजेंसी

अमरोहा। प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर वाचस्पति मिश्र ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं बल्कि समग्र समाज के उत्थान के लिए कार्य किया और सभी संप्रदायों की एकता के लिए आर्यसमाज नामक संस्था मंच के रूप में प्रदान की।

शनिवार को आयोजित जगदीश सरन हिंदू पीजी कॉलेज में 'महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन के विविध आयाम' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर मिश्र ने बताया कि संस्कृत भाषा को मूल भाषा क्यों कहा जाता है, उसके संबंध में अंग्रेजी भाषा और अन्य अनेक भाषाओं के उदाहरण देते हुए बताया कि उनके महीने और व्यवहार संबंधी शब्दावली का उद्भव संस्कृत भाषा से ही हुआ है।

मुख्य अतिथि कुलसचिव, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली ने कहा स्वराज के सर्वप्रथम उद्घोषक के रूप में महर्षि दयानंद का निश्चय ही भारतीय इतिहास की एक महान स्वर्णिम घटना है। विषय प्रवर्तक के रूप में प्रोफेसर राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने 3 श्लोकों के माध्यम से ऋषि दयानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व को नमन किया। साथ ही उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद ने त्रैतवाद के दर्शन का समर्थन किया।

अमरोहा के जेएस हिंदू पीजी कॉलेज में दयानंद-दर्शन के विविध आयाम किताब का विमोचन करते अतिथि। संवाद

मुख्य वक्ता प्रोफेसर विनय विद्यालंकार, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने कहा कि ऋषि दयानंद ने धर्म और विज्ञान को एक दूसरे का पूरक बताया। आपने कहा कि धर्म के बिना विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना धर्म लंगड़ा है। प्रबंध समिति के मंत्री योगेश कुमार जैन ने कहा कि परिस्थितियां प्रतिभाओं को जन्म देती हैं। महर्षि दयानंद भी परिस्थिति के अनुसार अवतरित पुरुष थे। प्राचार्य डॉ वीरेंद्र सिंह ने कहा कि स्वामी दयानंद के द्वारा स्थापित संस्थाएं सामाजिक कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा मनोयोग और तत्परता से लगी हुई है, यही उनका मूल उद्देश्य भी था।

प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता केए पीजी कॉलेज कासगंज के प्राचार्य डॉ अशोक रस्तोगी ने की। डॉ दुष्यंत कुमार प्राचार्य उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत अभ्यागत वैशिष्ट्य रहे। डॉ करुणा आर्य दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, डॉ. शिवपूजन सिंह दर्शनशास्त्र और ओंकार सिंह विषय विशेषज्ञ के रूप में रहे। एक दर्जन से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ नवनीत विश्नोई ने किया। दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर सारिका वार्ष्णेय ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो संजीव कुमार रहे।

विषय विशेषज्ञ के तौर पर प्रोफेसर रंजना अग्रवाल एनकेबीएमजी कॉलेज चंदौसी और वैदिक विद्वान जीवन सिंह आर्य गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़, कुलदीपक शुक्ला गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, डॉ हेमबाला सहायक आचार्य रहे। दूसरे सत्र का संचालन डॉ. मनन कौशल ने किया जबकि डॉ अशोक रुस्तगी ने धन्यवाद अदा किया। दूसरे तकनीकी सत्र में भी लगभग एक दर्जन से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया।

विज्ञान के बिना धर्म भी अधूरा : डा. विनय

जासं, अमरोहा : ऋषि दयानंद अनुसार धर्म और विज्ञान एक दूसरे का पूरक है। इसमें धर्म के बिना विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना धर्म भी अधूरा है। यह विचार मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रोफेसर डा. विनय विद्यालंकार ने जेएस हिंदू पीजी कालेज में सेमीनार के पहले दिन व्यक्त किए।

जेएस हिंदू पीजी कालेज में शनिवार को सेमीनार का उद्घाटन उत्तर प्रदेश संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर वाचस्पति मिश्र ने किया। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर डा. वाचस्पति मिश्र ने कहा कि संस्कृत भाषा को मूल भाषा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि महीने और व्यवहार संबंधी शब्दावली का उद्भव संस्कृत भाषा से ही हुआ है। मुख्य अतिथि रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली के कुलसचिव ने कहा कि स्वराज के सर्वप्रथम उद्घोषक के रूप में महर्षि दयानंद का निश्चय ही भारतीय इतिहास की एक महान स्वर्णिम घटना है।

करेंगी। प्राचार्या के समर्पण भाव से भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत को

भी किया। समापन पर प्राचार्या डा.सुमेधा ने सभी का आभार जताया।

उज्ज्वल भविष्य की कामना की। मूल रूप से रायबरेली जिले की निवासी सबा बतूल आब्दी अमरोहा ताइक्वांडो

इंटरनेशनल प्रतियोगिता में भी प्रतिभाग कर चुकी हैं, यहां उन्हें पांचवी रैंक मिली थी।

महर्षि दयानंद ने समाज को एकीकरण का सूत्र दिया

अमरोहा, संवाददाता। जेएस हिन्दू पीजी कॉलेज में महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन के विविध आयाम विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की सेमिनार का शनिवार को शुभारंभ हुआ। देशभर से आए शिक्षाविदों ने विचार रखे। कहा कि महर्षि दयानंद ने संपूर्ण समाज को एकीकरण का सूत्र दिया। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर वाचस्पति मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत भाषा को मूल भाषा क्यों कहा जाता है, इसकी जानकारी दी। महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली के कुलसचिव डा.राजीव कुमार ने कहा कि स्वराज के सर्वप्रथम उद्घोषक के रूप में महर्षि दयानंद का होना निश्चय ही भारतीय इतिहास की एक महान स्वर्णिम घटना है। विषय प्रवर्तक के रूप में प्रोफेसर राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने तीन श्लोकों के जरिए महर्षि दयानंद के व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन किया।प्रबंध समिति के मंत्री योगेश कुमार जैन ने कहा की परिस्थितियां प्रतिभाओं को जन्म देती हैं। कालेज प्राचार्य डा.वीर वीरेंद्र सिंह ने कहा की महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित संस्थाएं सामाजिक कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा, मनोयोग व तत्परता से लगी हैं। प्राचार्य वीर वीरेंद्र सिंह ने सभी का आभार जताया। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता पीजी कॉलेज कासगंज के प्राचार्य डा.अशोक रस्तोगी ने की। इस दौरान डा.दुष्यंत कुमार प्राचार्य उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत, डा.करुणा आर्य दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, डा.शिवपूजन सिंह दर्शनशास्त्र, ओंकार सिंह विषय विशेषज्ञ के रूप में रहे।

मुरादाबाद का पहला AICTE/BTEUP मान्यता प्राप्त निजी संस्थान
मुरादाबाद पॉलीटैक्निक इन्स्टीट्यूट
Institute Code- 1509 REGISTRATION OPEN :2022-23

जे.एस. हिंदू (पीजी) कॉलेज, अमरोहा

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित अखिल भारतीय सेमिनार में देशभर से पधारे विषय मर्मज्ञ

दयानंद दर्शन के विभिन्न आयाम विषय पर शोधार्थियों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा। जगदीश सरन हिंदू पीजी कॉलेज अमरोहा में 05 व 06 नवंबर, 2022 दिन शनिवार एवं रविवार को महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन के विविध आयाम विषय पर निहित यथार्थ ज्ञान से आत्मिक उन्नति एवं साधना का मार्ग प्रशस्त कर इहलौकिक अभ्युदय पर चर्चा एवं विचार विमर्श के लिए भारतवर्ष के शिष्ट विशिष्ट मनीषी जुटे। जहां सेमीनार में शिष्ट-विशिष्ट मनीषियों ने अपने ओजस्वी विचार रखे।

भारत में नवजागरण के पुरोधा, प्रमुखत: धर्म एवं समाज-सुधारक के रूप में ख्याति प्राप्त दार्शनिक महर्षि दयानंद सरस्वती सच्चे शिव अर्थात परमसत्य के अन्वेषण संलग्न अद्वितीय जिज्ञासु, सत्यान्वेषी विद्वान और चिंतक है, जिन्होंने प्रचलित भारतीय दार्शनिक स्थानों की स्वतंत्र समालोचना पूर्वक मौलिक एवं तार्किक दर्शनशास्त्रीय अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है। उनका चिंतन संप्रदाय विशेष पर अवलंबित ना होकर वेदानुसारी मौलिक तथा मानव जीवन के लिए उपयोगी है, जिसे समग्र रूप में दयानंद दर्शन कहा जा सकता है।

शनिवार को सर्वप्रथम ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से आए हुए विद्वतजनों ने नामांकन कराते हुए सहभागिता की। सेमिनार के प्रथम दिन उद्घाटन सत्र में देशभर के मनीषी और विद्वत जन एकत्र हुए। इस अवसर पर प्रोफेसर वाचस्पति मिश्र अध्यक्ष उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर आपने संस्कृत भाषा को मूल भाषा क्यों कहा जाता है उसके संबंध में अंग्रेजी भाषा और अन्य अनेक भाषाओं के उदाहरण देते हुए बताया कि उनके महीने और व्यवहार संबंधी शब्दावली का उद्भव संस्कृत भाषा से ही हुआ है। साथ ही कुलसचिव, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, मुख्य अतिथि रहे। आपने कहा कि स्वराज के सर्वप्रथम उद्घोषक के रूप में महर्षि दयानंद का ब्रह्मनिश्चय ही भारतीय इतिहास की एक महान स्वर्णिम घटना है।

विषय प्रवर्तक के रूप में प्रोफेसर राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने 3 श्लोकों के माध्यम से ऋषि दयानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व को नमन किया। साथ ही उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद ने त्रैतवाद के दर्शन का समर्थन किया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर विनय विद्यालंकार, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने कहा ऋषि दयानंद ने धर्म और विज्ञान को एक दूसरे का पूरक बताया आपने कहा कि धर्म के बिना विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना धर्म लंगड़ा है।

प्रबंध समिति के मंत्री योगेश कुमार जैन ने कहा कि परिस्थितियां प्रतिभाओं को जन्म देती है। महर्षि दयानंद भी परिस्थिति के अनुसार अवतरित पुरुष थे। आपने सामाजिक असमानता ओं विद्रूपता ओं के विरुद्ध आंदोलन और संघर्ष किए और नवा चरण और नवजागरण के प्रतिमान स्थापित किए। प्राचार्य डॉ0 वीरेंद्र सिंह ने कहा कि स्वामी दयानंद के द्वारा स्थापित संस्थाएं सामाजिक कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा मनोयोग और तत्परता से लगी हुई है। यही उनका मूल उद्देश्य भी था। उद्घाटन सत्र में आए सभी शिष्ट विशिष्ट अतिथियों गणमान्य नागरिकों पत्रकारों और सुधि विद्वतजनों के प्रति आभार प्रकट किया। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता के पीजी कॉलेज कासगंज के प्राचार्य डॉ0 अशोक रस्तोगी ने की। डॉ0 दुष्यंत कुमार प्राचार्य उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत अभ्यागत वैशिष्ट्य रहे। डॉ0 करुणा आर्य दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, डॉक्टर शिवपूजन सिंह दर्शनशास्त्र और ओंकार सिंह विषय विशेषज्ञ के रूप में रहे। लगभग 1 दर्जन से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर नवनीत विश्नोई प्रतिवेदन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर संगीता धामा ने किया। तत्पश्चात दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर सारिका वार्ष्णेय ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो संजीव कुमार रहे। विषय विशेषज्ञ के तौर पर प्रोफेसर रंजना अग्रवाल एनकेबीएमजी कॉलेज चंदौसी और वैदिक विद्वान जीवन सिंह आर्य गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ तथा कुलदीपक शुक्ला गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर एवं डॉक्टर हेमबाला सहायक आचार्य ने अपने सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र का संचालन डॉक्टर मनोज कौशल और प्रतिवेदन श्री राजीव कुमार धन्यवाद ज्ञापन रुस्तगी ने किया। दूसरे तकनीकी सत्र में भी लगभग 1 दर्जन से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया।

समाज में फैली कुरीतियों के खात्मे को उठाई थी दयानंद ने आवाज

जासं, अमरोहा: श्रीमद् दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा की प्राचार्य डा.सुमोधा ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती एक प्रवर्तक व विचार दृष्टा के उद्घोषक थे। उन्होंने समाज में फैली बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। वह रविवार को जेएस पीजी हिंदू कालेज में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार के समापन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थीं।

कालेज परिसर में आयोजित सेमिनार का विषय स्वामी दयानंद सरस्वती : दर्शन के विविध आयाम' रखा गया। स्वागत भाषण और संक्षिप्त परिचय डा. बीना रुस्तगी ने प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता प्रो. राजेश्वर मिश्र ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज में फैली कुरीतियों का खात्मा किया। आइसीपीएआर के सचिव प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र ने कहा कि आर्य वह है, जिसके व्यवहार से प्राणी मात्र को सुख मिलता है।

प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष लीलाधर अरोड़ा ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार वह अच्छा और बुद्धिमान व्यक्ति है, जो हमेशा सच बोलता है। प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष उमेश कुमार गुप्ता ने अमरोहा की गौरव गाथा और सांस्कृतिक एकता के वातावरण को उल्लेखित किया। कालेज के प्राचार्य डा. वीर वीरेंद्र सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। तृतीय सत्र में स्वामी दयानंद का समाज दर्शन विषय पर शिक्षाविदों ने अपने विचार रखे।

इसमें मुख्य अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ के डा. सत्यकेतु, विशिष्ट अतिथि डा. अजीत सिंह उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ, विषय विशेषज्ञ डा. आरके गुप्ता बरेली कालेज बरेली, डा. नीलम बीडीएमयू महाविद्यालय शिकोहाबाद और डा. यश कुमार ढाका शोभायमान ने विचार व्यक्त किए। चंद्र प्रकाश यादव, डा. संजय जौहरी, डा. नरेंद्र सिंह, डा. मनोज, डा. सुमित गंगवार, डा. मोहित वर्मा, डा. सौरभ कुमार आदि शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। चौथे सत्र में मंचीय अध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रोफेसर सारस्वत मोहन मनीषी, विशिष्ट अतिथि प्राचार्य डा. सुनील चौधरी केजीके कालेज, डा. यशवंत ढाका जेएनयू आदि मौजूद रहे।

04.11.2022 विज्ञापन वेबसाइट www.upgov.

जे. एस. हिंदू (पी. जी.) कॉलेज में संपन्न हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय दर्शन अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित सेमिनार में "दयानंद दर्शन के विविध आयाम" विषय पर देश के प्रख्यात विद्वानों ने पढ़े शोध पत्र

महर्षि दयानंद सरस्वती को बताया स्वराज्य का सर्वप्रथम उद्घोषक, महान वेदोद्धारक, राष्ट्रभाषा का उन्नायक, त्रैतवाद का पोषक व संपूर्ण क्रांति का सूत्रधार

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा। जगदीश सरन हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा में 'स्वामी दयानंद सरस्वती : दर्शन के विविध आयाम' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन समापन समारोह में महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया तत्पश्चात स्वागत भाषण और संक्षिप्त परिचय डॉ बीना रूस्तगी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ सुमेधा , प्राचार्य श्रीमद दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती युग प्रवर्तक, विचार द्रष्टा, त्रैतवाद के उद्घोषक थे। आपने कहा दीपक जलाने से अंधकार मिट सकता है कोहरा नहीं।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो राजेश्वर मिश्र जी ने इस अवसर पर कहा कि आपने कुप्रथाओं और कुरीतियों जैसी बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहार किया। आप ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अन्य मतावलंबी भी सम्मान करते थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए ने कहा कि आईसीपीएआर के सदस्य सचिव प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र ने कहा स्वामी दयानंद के अनुसार सच्चा आर्य वह है जिसके व्यवहार से प्राणी मात्र को सुख मिलता है और जो इस पृथ्वी पर सत्य अहिंसा परोपकार पवित्रता आदि गुणों को विशेष रूप से धारण करता है। 'वेदों की ओर लौटो' यह उनका प्रमुख संदेश व नारा था।

प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष लीलाधर अरोड़ा के अनुसार स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा कि वह अच्छा और बुद्धिमान है जो हमेशा सच बोलता है, धर्मानुसार काम करता है और दूसरों को उत्तम और प्रसन्न बनाने का काम करता है। प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष श्री उमेश कुमार गुप्ता ने अमरोहा की गौरव गाथा और सांस्कृतिक एकता के वातावरण को उल्लेखित किया। आपने कहा स्वामी दयानंद भारत में पुनर्जागरण के मुख्य पुरोधा थे। सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ वीर वीरेंद्र सिंह ने किया।

सेमिनार के दूसरे दिन तृतीय सत्र का विषय 'स्वामी दयानंद का समाज दर्शन' रहा। इस विषय पर मंच पर अध्यक्ष के रूप में डॉक्टर सत्यकेतु लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, विशिष्ट अतिथि के तौर पर डॉ अजीत सिंह उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ, विषय विशेषज्ञ डॉ आर के गुप्ता, बरेली कॉलेज बरेली, डॉक्टर नीलम बीडीएमयू महाविद्यालय, शिकोहाबाद और डॉ यश कुमार ढाका शोभायमान रहे। इस सत्र में श्री चंद्र प्रकाश यादव, डॉ संजय जौहरी, डॉक्टर नरेंद्र सिंह डॉ मनोज डॉ सुमित गंगवार डॉक्टर मोहित वर्मा डॉ सौरभ कुमार सहित लगभग डेढ़ दर्जन विद्वतजन और शोधार्थियों ने शोध पत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन इतिहास विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ पीयूष शर्मा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ नवनीत विश्नोई ने किया।

चतुर्थ सत्र में मंचीय अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रोफेसर सारस्वत मोहन मनीषी , विशिष्ट अतिथि डॉक्टर सुनील चौधरी प्राचार्य केजीके कॉलेज मुरादाबाद, डॉ यशवंत ढाका, जेएनयू, डॉ आनंद कुमार सेवानिवृत्त आईपीएस रिसर्च फेलो महर्षि दयानंद शोध पीठ चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, प्रोफेसर अजीत कुमार जैन श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय अलीगढ़ रहे। इस सत्र में लगभग एक दर्जन शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रिका वाचन किया और सामाजिक परिपेक्ष में महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों को प्रस्तुत किया। इस सत्र में कुमारी मधुमिता कुमारी कोमल वार्ष्णेय श्री राजकुमार ओमवती डॉक्टर नरेंद्र सिंह डॉ मनोज कुमार डॉ सुमित गंगवार मोहिता वर्मा श्री सौरभ कुमार आदि ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष और असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ हिमांशु शर्मा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर और अध्यक्ष डॉक्टर बीना रूस्तगी ने किया।

हरिओम ने 24 और मोहसिन ने 17 सलमान ने 1-1 विकेट लिया। लक्ष्य मैन ऑफ द मैच दिया।

दयानंद सरस्वती ने कुरीतियों पर किया प्रहार

जेएस हिंदू कॉलेज में हुआ दो दिवसीय सेमिनार का समापन

संवाद न्यूज एजेंसी

अमरोहा। जेएस हिंदू कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के समापन पर वक्ताओं ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने कुरीतियों पर प्रहार किया।

जगदीश सरन हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 'स्वामी दयानंद सरस्वती दर्शन के विविध आयाम' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन समापन समारोह में महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता प्रो राजेश्वर मिश्र ने कहा कि स्वामी दयानंद ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर सबसे निर्भीक प्रहार किया।

मुख्य अतिथि डॉ. सुमेधा ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती युग प्रवर्तक, विचार दृष्टा, त्रेतवाद के उद्घोषक थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए ने कहा कि

जेएस हिंदू कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि। संवाद

आईसीपीएआर के सदस्य सचिव प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र ने कहा कि स्वामी दयानंद के अनुसार सच्चा आर्य वह है जिसके व्यवहार से प्राणी मात्र को सुख मिलता है और जो इस पृथ्वी पर सत्य, अहिंसा, परोपकार, पवित्रता आदि गुणों को विशेष रूप से धारण करता है। मंच पर अध्यक्ष के रूप में डॉक्टर सत्यकेतु लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, विशिष्ट अतिथि डॉ. अजीत सिंह उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ, विषय विशेषज्ञ डॉ आर के गुप्ता, बरेली कॉलेज बरेली, डॉक्टर नीलम बीडीएमयू महाविद्यालय, शिकोहाबाद और डॉ. यश कुमार ढाका रहे। चतुर्थ सत्र में मंचीय अध्यक्ष, दिल्ली विवि दिल्ली के प्रोफेसर सारस्वत मोहन मनीषी, विशिष्ट अतिथि डॉ. सुनील चौधरी प्राचार्य केजीके कॉलेज मुरादाबाद, डॉ. आनंद कुमार सेवानिवृत्त आईपीएस रिसर्च फेलो महर्षि दयानंद शोध पीठ चंडीगढ़ विवि, प्रोफेसर अजीत कुमार जैन श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय अलीगढ़ रहे।

डीयू: आज कॉलेज व

दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का समापन

अमरोहा, संवाददाता। जेएस हिंदू पीजी कालेज में स्वामी दयानंद सरस्वती : दर्शन के विविध आयाम विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का रविवार का विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुरुकुल चोटीपुरा महाविद्यालय की संस्थापिका डा. सुमेधा नें कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती युग प्रवर्तक, विचार दृष्टा, त्रेतवाद के उद्घोषक थे। आपने कहा दीपक जलाने से अंधकार मिट सकता है कोहरा नहीं। मुख्य वक्ता प्रो राजेश्वर मिश्र ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती नें कुरीतियों जैसी बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहार किया। साथी आप ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अन्य मतावलंबी भी सम्मान करते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र ने कहा स्वामी दयानंद के

अमरोहा के जेएस हिंदू पीजी कॉलेज में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की सेमिनार में मौजूद शिक्षाविद।

अनुसार सच्चा आर्य वह है जिसक्रे व्यवहार से प्राणी मात्र को सुख मिलता है और जो इस पृथ्वी पर सत्य अहिंसा परोपकार पवित्रता आदि गुणों को विशेष रूप से धारण करता है। इस मौके पर प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष लीलाधर अरोड़ा, प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष उमेश कुमार गुप्ता, महाविद्यालय के प्राचार्य डा. वीर वीरेंद्र सिंह, लखनऊ विवि डा. सत्यकेतु, अन्य डा. अजीत सिंह, डा.आर के गुप्ता, डा. नीलम, डा. यश कुमार ढाका, चंद्र प्रकाश यादव, डा. संजय जौहरी, डा. नरेंद्र सिंह, डा. मनोज, डा. सुमित गंगवार, डा. मोहित वर्मा, डा. सौरभ कुमार, इतिहास विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. पीयूष शर्मा, डा. नवनीत विश्नोई, दिल्ली विवि के प्रोफेसर सारस्वत मोहन आदि उपस्थित रहे।

बैंक Canara Bank
क्षेत्रीय कार्यालय
सिविल लाइंस
मुरादाबाद

कब्जा सूचना
धारा 13(4) के अंतर्गत (अचल सम्पतियों के लिए)

जेएस कालेज में हुआ दो दिवसीय सेमिनार का समापन

अमरोहा (विधान केसरी)। जेएस हिन्दु पीजी कालेज में ह्रश्स्वामी दयानंद सरस्वती दर्शन के विविध आयामश विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन समापन समारोह में महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात स्वागत भाषण और संक्षिप्त परिचय डॉ. बीना रूस्तगी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि प्राचार्य श्रीमद दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा डॉ. सुमेधा ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती युग प्रवर्तक, विचार द्दष्टा, त्रेतवाद के उद्घोषक थे। आपने कहा दीपक जलाने से अंधकार मिट सकता है कोहरा नहीं। मुख्य वक्ता प्रो राजेश्वर मिश्र ने कहा कि आपने को प्रथम और कुरीतियों जैसी बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहार किया साथी आप ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अन्य मताबलंबी भी सम्मान करते थे। आईसीपीएआर के सदस्य सचिव प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र ने कहा स्वामी दयानंद के अनुसार सच्चा आर्य वह है जिसके व्यवहार से प्राणी मात्र को सुख मिलता है और जो इस पृथ्वी पर सत्य अहिंसा परोपकार पवित्रता आदि गुणों को विशेष रूप से धारण करता है। श्वेदों की ओर लौटोश यह उनका प्रमुख संदेश व नारा था। कार्यक्रम को प्रबंध समिति उपाध्यक्ष लीलाधर अरोड़ा ने कहा कि वह अच्छा और बुद्धिमान है जो हमेशा सच बोलता है, धमार्नुसार काम करता है और दूसरों को उत्तम और प्रसन्न बनाने का काम करता है। सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ वीर वीरेंद्र सिंह ने किया। इस सत्र में श्री चंद्र प्रकाश यादव, डॉ संजय जौहरी,डॉ. मनोज, डा॔. सुमित गंगवार डा. मोहित वर्मा, डॉ. सौरभ कुमार सहित लगभग डेढ़ दर्जन विद्वतजन और शोधार्थियों ने शोध पत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पीयूष शर्मा ने व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नवनीत विश्नोई ने किया। इस दौरान मंच पर डॉ. अजीत सिंह, डॉ आरके गुप्ता, डॉ. नीलम, डा. यश कुमार ढाका शोभायमान रहे। चतुर्थ सत्र में मोहन मनीषी, विशिष्ट अतिथि डॉ. सुनील चैधरी, डॉ. यशवंत ढाका, डॉ. आनंद कुमार, अजीत जैन रहे। इस सत्र में लगभग एक दर्जन शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रिका वाचन किया और सामाजिक परिपेक्ष में महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों को प्रस्तुत किया। इस सत्र में मधुमिता, कोमल वार्ष्णेय, राजकुमार, डॉ. मनोज कुमार, डॉ. सुमित गंगवार, मोहिता वर्मा, सौरभ कुमार ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।